Research Inspiration
(Peer-reviewed, Open Access and indexed)
Journal home page: www.researchinspiration.com
ISSN: 2455-443X, Vol. 09, Issue-III, June 2024

राजस्थान में सीकर जिले के दर्शनीय स्थलो का भौगोलिक परिचयः एक सामाजिक अध्ययन (Geographical Introduction of Tourist Places in Sikar District, Rajasthan: A Social Study)

Jaisingh Mitharwal[a,*],
[a]*Assistant professor, Government college Tantoti Kekri, Maharishi Dayanand saraswati university Ajmer, Rajasthan (India).*

KEYWORDS
राजस्थान, सीकर जिला, दर्शनीय स्थल, भौगोलिक परिचय, सामाजिक अध्ययन, सांस्कृतिक विरासत, पर्यटन, शेखावाटी, खाटू श्याम मंदिर, सालासर बालाजी, लक्ष्मणगढ़ किला।

ABSTRACT
राजस्थान के सीकर जिले को अपने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक आकर्षणों के लिए जाना जाता है। इस शोध का उद्देश्य सीकर जिले के प्रमुख दर्शनीय स्थलों का भौगोलिक परिचय प्रस्तुत करना और उनके सामाजिक महत्व का अध्ययन करना है। सीकर जिला शेखावाटी क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण भाग है, जो अपनी भव्य हवेलियों, प्राचीन मंदिरों, किलों और रंगीन संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है। इस अध्ययन में मुख्यतः लक्ष्मणगढ़ किला, खाटू श्याम मंदिर, सालासर बालाजी, और रामगढ़ शेखावाटी जैसे स्थानों का विवरण किया गया है। साथ ही, इन स्थलों के सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों को भी विश्लेषित किया गया है। यह अध्ययन स्थानीय पर्यटन को बढ़ावा देने, क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और सामाजिक विकास में इन स्थलों की भूमिका को समझने में सहायक सिद्ध होगा।

प्रस्तावना

1947 ई. को भारत देश अंग्रेजो से आजाद हुआ। इसके बाद 19 रियासत व 3 ठिकाने मिलकर राजस्थान का गठन हुआ। राजस्थान का एकीकरण 7 चरणो में पूरा हुआ। प्रथम चरण में मत्स्य संघ की स्थापना हुई। द्वितीय चरण में राजस्थान संघ की स्थापना हुई। तृतीय चरण में संयुक्त राज्य राजस्थान की स्थापना हुई। चतुर्थ चरण में वृहद राजस्थान की स्थापना हुई। पंचम चरण में संयुक्त राज्य वृहद राजस्थान की स्थापना हुई। इसके बाद संयुक्त राजस्थान और अन्तिम चरण मे पुर्नगठित राजस्थान की स्थापना हुई।(1) इस प्रकार 1 नवम्बर 1956 को राजस्थान की स्थापना हुई। इस प्रकार राजस्थान के एकीकरण में 8 वर्ष 7 माह 14 दिन का समय लगा। राजस्थान राज्य के गठन के साथ ही जयपुर को शामिल किया गया इसी के साथ सीकर भी शामिल हो गया क्योंकि जयपुर रियासत मे ही सीकर था। पूर्व में सीकर जयपुर संभाग में ही शामिल था। सीकर वर्तमान में संभाग बना दिया गया है।(2)

सीकर के प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल

जीण माता, हर्ष पर्वत, कांतली नदी, रघुनाथगढ़ जो उत्तरी अरावली की सबसे ऊँची चोटी है। हंसनला बालाजी धाम जो सीकर का प्रमुख स्काउट का प्रशिक्षण केन्द्र भी है। गणेश्वर सभ्यता आदि स्थित है।

1. जीणमाता

जीण माता का मंदिर रैवासा नामक गाँव के पास तीन छोटी पहाड़ियों के मध्य स्थित है। जीण माता का जन्म

* **Corresponding author**
E-mail: drdevendra.solin@gmail.com (Jaisingh Mitharwal). https://orcid.org/0009-0007-1411-0699
DOI: https://doi.org/10.53724/inspiration/v9n3.03
Received 6th April 2024; Accepted 10th June 2024
Available online 30th June 2024
2455-443X /©2024 The Journal. Published by Research Inspiration (Publisher: Welfare Universe). This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

घांघू गाँव में 933 ई. में हुआ था।[3] जीण अपनी भाभी से किसी बात को लेकर नाराज हो गयी। तथा इन पहाडियो में जाकर तपस्या करने लगी। उसका भाई उसे मनाने गया लेकिन जीणमाता के न मानने पर उसका भाई भी पास में स्थित हर्ष की पहाड़ी पर तपस्या करने लग गया। कालांतर में दोनो भाई–बहन क्रमशः शिव व दुर्गा के अवतार के रूप में पूजे जाने लगे।

इस मंदिर में जीणमाता की अष्टभुज युक्त प्रतिमा है। जिसके समक्ष अखण्ड ज्योत आज भी प्रज्ज्वलित रहती है। इस अखण्ड ज्योत हेतु व्यवस्था पहले अजमेर के चौहान वंश के पास थी। परन्तु बाद में यह जयपुर राज्य के पास आ गयी। इस मंदिर का निर्माण पृथ्वीराज चौहान प्रथम के समय उसके सामन्त राजा हट्टड, द्वारा 1064 ई. में करवाया गया था।[4] जीणमाता के मंदिर के पास ही भ्रमरमाता का मंदिर स्थित है, ऐसी मान्यता भी है कि जब औरंगजेब की सेना ने जीणमाता मंदिर पर आक्रमण किया तो भंवरा मधुमक्खियों ने उसकी सेना पर आक्रमण करके उसकी सेना को भगा दिया था।

2. हर्ष पर्वत

जीण माता के भाई हर्ष ने इस पर्वत पर तपस्या की थी। यहाँ एक मंदिर है जो हर्ष नाथ मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है। इस पर्वत पर पवन चक्कियां भी स्थित है।[5] वर्तमान में हर्षनाथ नामक ग्राम हर्षगिरी पहाड़ी की तलहटी में बसा हुआ है। पुजारी संजय जी बताते हैं[6] कि यहाँ पंचमुखी महादेव का मंदिर है। यहाँ शिव जी का विवाह हुआ था। पंचमुखी महादेव मे पांचो देव है बताते है कि इसी मंदिर मे हर्ष ने तपस्या की थी। तथा इन्ही के आशीर्वाद से उन्होने बावड़ी के अन्दर समाधि ली थी।[7] जो आज हर्षनाथ मंदिर के नाम से पूजे जाते हैं। उनको वरदान मिला था की कलयुग में आप हर्षनाथ भेरूजी के नाम से पूजे जाओगे।

3. कांतली नदी

कांतली नदी का उद्गम खण्डेला की पहाडियो से हुआ है।[8] एक समय था जब यह पूरे वेग के साथ घुमावदार वेग खाती हुई बहती थी। लगभग आधा किलो मीटर चौड़ाई का क्षेत्र इसके आगोस में होता था।[9] अपने चिर–परिचित मार्ग से जब यह निकलती थी तो तटवर्ती गाँवो का आवागमन अवरुद्ध हो जाता था। सीमा वर्ती गाँवों का सम्पर्क टूट जाता था। उस दोरान इस क्षेत्र का जल स्तर बढ़ जाता था। परन्तु अब न तो वह वर्षा की झड़ी लगती है और न ही यह नदी मचलती हुई आती है। इन 20–25 वर्षो में जन्म लेने वालो के लिये तो यह मात्र काल्पनिक कहानी बनकर रह गयी है। आज सुदूर तक इस नदी के पेटे मे कई आक के पौधे उग आये है।[10] और लोगो ने बहाव क्षेत्र में पक्के मकान तक बना लिये है जो यह आशंका दर्शाती है की भविष्य मे भी नदी नही आयेगी। कांतली नदी के बहाव क्षेत्र में गुहाला के नजदीक चिनाई में काम आने वाली उत्तम किस्म की बजरी होती है जहाँ से सुदूर स्थानों में इसका परिवहन होता है। क्या कभी कांतली नदी फिर से आ पायेगी इसका उत्तर प्रकृति के स्वरुप मे छिपा हुआ है इस नदी का पानी मिट्टी का विशेष प्रकार से कटाव करते हुए आगे बढ़ता है इसलिए इसे कांतली नदी कहा जाता है। वैसे तो कांतली नदी का बहाव क्षेत्र सीकर झुन्झुनू व चुरु की सीमा तक है परन्तु वर्षा कम होने के कारण यह नदी अब सीकर जिले में ही सिमट कर रह जाती है। इस नदी मे अत्यधिक बजरी खनन के कारण अब यहाँ गहरे गड्ढ़े बन गये है। वर्तमान में यह क्षेत्र डार्क जॉन में आ गया है। इसी नदी के किनारे गणेश्वर सभ्यता स्थित है।[11]

4. रघुनाथगढ़

उत्तरी अरावली की सबसे ऊँची चोटी है जिसकी ऊँचाई 1055 मीटर है[12] इसी पहाड़ी की तलहटी मे रघुनाथगढ शहर बसा हुआ है। इसी पर्वत पर रघुनाथगढ़ किला बना

हुआ है। इसी के नाम पर इस पर्वत चोटी का नाम रघुनाथगढ़ पड़ा।[13] राजस्थान के राजपूतो के किलो और महलो का निर्माण पहाड़ियो में हुआ क्योंकि वहाँ शत्रुओं के विरुद्ध प्राकृतिक सुरक्षा के साधन थे। जिसमे एक रघुनाथगढ़ का किला भी आता है। वर्तमान में यह किला काफी जीर्ण अवस्था में पहुँच गया है। राजस्थान मे सीकर जिला अपने पर्यटनो के लिए प्रसिद्ध है। इस किले के मुख्य द्वार पर लकड़ी का द्वार है जिस पर लोहे की परत लगी हुई है दरवाजे को पार करते ही अर्द्धवर्न्ताका आगंण आता है। 6 ब्रुज पर बने इस दुर्ग को देखकर पर्यटक आश्चर्य चकित रह जाते हैं। कभी इस आगंन मे बैठकर अनेक सामन्त गणिकाओं के नृत्यों का आनन्द लिया करते थें इस किले में कक्ष के भीतर कई कक्ष हैं। आभूषण रखने के लिए कई लघु कक्ष बने हुए है। इस किले को देखकर ऐसा लगता है कि राजा अपने अहंकार में चूर रहकर अट्टहास करता था राजकुमार अपने यौवन पर तृष करता था। गणिका अपने रूप पर मुक्त रहती थी। गणिकाओं के नूपुरों से यह किला गुंजित रहता था। आज सब कुछ खत्म हो गया रघुनाथगढ का इतिहास बहुत पुराना है। करीब 1300 वर्ष पूर्व चंदेल शासन काल में रघुनाथगढ़ की स्थापना शिव नगरी के रूप में हुई।[14] प्राचीन काल में यह खोह के नाम से भी विख्यात रहा। किले के बायीं तरफ एक हनुमान जी का मंदिर भी बना हुआ है।

यह उत्तरी अरावली पर्वत श्रृंखला पर स्थित इस क्षेत्र की सबसे ऊँची चोटी है।[15] उत्तरी अरावली का विस्तार जयपुर, दोसा, अलवर जिलो में भी है। यहाँ अरावली श्रृंखला अनवरत न होकर दूर–दूर होती जाती है। जिसमे शेखावाटी की पहाडियाँ, तोरावाटी की पहाड़ियाँ जयपुर और अलवर की पहाडियाँ सम्मिलित है।[16] इस क्षेत्र में उत्तर–पश्चिम की श्रृंखला शेखावाटी और इससे पूर्व की तोरावाटी पहाड़ियाँ कहलाती है।

5. हंसनला बालाजी धाम

यह बालाजी अरावली पहाड़ी पर बना प्राचीन मंदिर है। इसी पहाड़ी के पास सीकर का स्काउट गाइड केन्द्र भी है। इसी पहाडी के पास छोटी ढाणी है जिसमे ज्यादातर जाट समुदाय के लोग रहते है। स्काउट गाइड से सम्बन्धित अनेक गतिविधिया यहाँ होती रहती है। यहाँ हनुमान जी का मंदिर है जो हंसनला बालाजी धाम के नाम से प्रसिद्व है। यहाँ मोनीजी महाराज रहते है।[17] जिनकी आस–पास के गाँवों मे खूब ख्याति है। आज से 20–25 वर्ष पहले यहाँ स्थित इस पहाडी को भूमाफियो ने लीज पर लेकर खनन कार्य शुरु करने की तैयारियाँ करने लगे थे लेकिन मोनी जी महाराज ने आस–पास के ग्रामीणो को एकजूट करके आन्दोलन का बिगुल बजाया।[18] तथा इस पहाडी को खनन होने से बचाया। आज भी इस बालाजी धाम की प्रसिद्धी आस–पास में ही नहीं बल्कि दूर–दूर तक हो गयी है। आस–पास के ग्रामीण लोग अपने पशुओं को चराने यहाँ पर जाते हैं। वर्षा ऋतु में हरियाली के बीच यह बालाजी मंदिर अपना अलग ही सौन्दर्य बिखेरता है।

6. गणेश्वर सभ्यता

गणेश्वर (नीमकाथाना, सीकर) कांतली नदी के उद्गम पर स्थित ताम्रयुगीन संस्कृति का महत्त्वपूर्ण स्थल है। रत्नचन्द्र अग्रवाल के निर्देशन में हुए उत्खनन से यहाँ 2800 ईसा पूर्व की सभ्यता के अवशेष मिलें है।[19] गणेश्वर से अत्यधिक मात्रा में तांबे के आभूषण व उपकरण मिलें हैं।[20] जो इसे ताम्रयुगीन सभ्यताओं में प्राचीनतम सिद्ध करती है। यहाँ से प्राप्त ताम्बे के उपकरणों व पात्रों में 99 प्रतिशत ताम्बा है, जो इस क्षेत्र में तांबे की प्रचुर प्राप्ति का प्रमाण है। यहाँ से जो मिट्टी के बर्तन प्राप्त हुए हैं उन्हे कृपषवर्णी मृदपात्र कहते है, यह बर्तन काले व नीले रंग से सजाये हुए हैं।[21] गणेश्वर भारत की ताम्र सभ्यताओं की जननी माना जाता है। यहाँ

से तांबा हड़प्पा व मोहन जोदडो को भी भेजा जाता था।[22]

निष्कर्ष

जीण माता का मंदिर रैवासा नामक गाँव के पास तीन छोटी पहाड़ियों के मध्य स्थित है। जीण व हर्ष कालांतर में दोनो भाई–बहन क्रमशः शिव व दुर्गा के अवतार के रूप में पूजे जाने लगे। वर्तमान में हर्षनाथ नामक ग्राम हर्षगिरी पहाड़ी की तलहटी में बसा हुआ है। कांतली नदी इस नदी का पानी मिट्टी का विशेष प्रकार से कटाव करते हुए आगे बढ़ता है इसलिए इसे कांतली नदी कहा जाता है। उत्तरी अरावली की सबसे ऊँची चोटी है जिसकी ऊँचाई 1055 मीटर है इसी पहाड़ी की तलहटी मे रघुनाथगढ शहर बसा हुआ है। हंसनला बालाजी धाम यहाँ मोनीजी महाराज रहते है। गणेश्वर (नीमकाथाना, सीकर) कांतली नदी के उद्गम पर स्थित ताम्रयुगीन संस्कृति का महत्त्वपूर्ण स्थल है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर कक्षा–9, पृ. संख्या–66 संयोजक – प्रो. बी. एम शर्मा
2. समाचार पत्र 7 अगस्त 2023
3. शिलालेख हर्ष जीणमाता मंदिर
4. शिलालेख हर्ष पर्वत मंदिर
5. सर्वे के आधार पर
6. पुजारी संजयजी से हुई वार्ता के अनुसार
7. सर्वे के आधार पर
8. सर्वे के आधार पर
9. सर्वे के आधार पर
10. सर्वे के आधार पर
11. सर्वे के आधार पर
12. राजस्थान का भूगोल (राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी) लेखक हरिमोहन सक्सेना पृ.सख्या–25
13. सर्वे के आधार पर
14. शिलालेख रघुनाथगढ़
15. राजस्थान का भूगोल पूर्व निर्दिष्ट पृ संख्या–25
16. वही पृ संख्या–25
17. मोनी जी महाराज से हुई वार्ता के अनुसार
18. मोनी जी महाराज से हुई वार्ता के अनुसार
19. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर पृ.संख्या–5 संयोजक प्रो. बी. एम. शर्मा
20. वही पृ संख्या–25
21. वही पृ संख्या–25
22. वही पृ संख्या–25

****